

# जिम्मेवारी

जीवन में श्रेष्ठ जिम्मेवारी उठाना एक महान गुण है। श्रेष्ठ जिम्मेवारी का अभिप्राय ऐसा कार्य करने की हिम्मत रखने से है जिसमें स्वयं के कल्याण के साथ अनेकों का कल्याण समाया हुआ हो। जिम्मेवारी व्यक्ति को अनुभवी बनाने के साथ-साथ शक्तिशाली भी बनाती है। कई व्यक्ति उत्तरदायित्व उठाने से यह सोचकर घबरा जाते हैं कि जिम्मेवारी उठाने से पता नहीं कौन सी समस्या अथवा विघ्नों को झेलना पड़ेगा। इसलिए वे कोई जिम्मेवारी उठाकर अपने मन को कष्ट नहीं देते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस कलियुगी दुनिया में जब कोई व्यक्ति किसी लक्ष्य या कार्य को लेकर आगे बढ़ता है तो उसके मार्ग में विघ्नों का आना एक स्वाभाविक बात है लेकिन प्राकृतिक अथवा मानवकृत विघ्नों से घबराकर जिम्मेवारी न उठाना तो कायरता है, नपुंसकता है। एक कायर व्यक्ति ही यह सोचेगा कि मैं जिम्मेवारी क्यों उठाऊँ? ऐसा व्यक्ति सदा आलस्य तथा अलबेलेपन का शिकार बना रहेगा, जबकि श्रेष्ठ जिम्मेवारी उठाने वाला व्यक्ति प्रतिपल अपने भीतर अनुभवों की खान भरता जाता है। अनुभवीमूर्त बनने से उसकी अंतरात्मा शक्तिशाली बन जाती है और आलस्य तथा अलबेलेपन का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं रहता। सुस्ती आती ही तब है जब कोई जिम्मेवारी नहीं होती। उदाहरण के लिए जो व्यक्ति रोजाना अपने दफ्तर में जाता है वह छुट्टी वाले दिन मन में सोच लेता है कि आज तो मेरा छुट्टी का दिन है इसलिए आराम करूँगा और वह उस दिन घोड़े बेच कर सोता है। लेकिन जिस दिन उसे दफ्तर में जाना हो, स्कूल अथवा कॉलेज में जाना हो या कोई ट्रेन पकड़नी हो तो उसकी नींद ही हराम हो जाती है क्योंकि अब उसे जिम्मेवारी निभानी है।

## जिम्मेवारी एक कला

जिम्मेवारी पूरी करते हुए प्रसन्न रहना एक ऊँची कला है। जिम्मेवारी का बीड़ा उठाने वाले को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उसे अपने मन की कमजोरियों का ज्ञान हो जाता है। लेकिन कमजोरियाँ सामने आने पर उत्तरदायित्व से विमुख हो जाना भी कायरता है। ऐसे नाजुक समय पर आत्मविश्वास, हिम्मत और ढाढ़स ये तीनों गुण जिम्मेवारी उठाने की शक्ति भरते हैं। हिम्मत बढ़ाने वाले तो बहुत मिल जाते हैं लेकिन ढाढ़स और धैर्य व्यक्ति की वह आंतरिक शक्ति है जिसका आधार आत्मविश्वास है। जहाँ आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मविश्वास होता है वहाँ आत्मबल

स्वतः ही बढ़ने लगता है। यही आत्मबल किसी भी श्रेष्ठ जिम्मेवारी को सफलतापूर्वक निभाने में सहायक सिद्ध होता है।

आत्मविश्वास और ढाढ़स बढ़ाने के लिए व्यक्ति का इस बात पर दृढ़ निश्चय होना आवश्यक है कि जो कार्य मानवता के कल्याण प्रति ईश्वर ने या किसी ने भी हमारे सुपुर्द किया है तो कुछ गुण देखकर ही किया होगा। यदि वे गुण न भी हों तो भी जिम्मेवारी निभाने की हिम्मत रखने वाले में वे सब गुण स्वतः ही आ जाते हैं। जहाँ हिम्मत है वहाँ भगवान स्वयं मददगार बन जाता है। इसलिए कहा भी गया है—हिम्मते मरदा, मददे खुदा। जिस कार्य में स्वयं परमात्मा मददगार है उस कार्य में सफलता न हो यह हो नहीं सकता। यदि कोई जिम्मेवारी उठाने से पहले ही संशयबुद्धि बन जाए कि पता नहीं मैं कर सकूँगा या नहीं, अर्थात् हिम्मत हार कर बैठ जाए तो परमात्मा की मदद भी नहीं मिलेगी।

जिम्मेवारी निभाते हुए बोझ अनुभव न हो बल्कि व्यक्ति हल्का रहे उसके लिए आवश्यक है कि परिणाम की चिंता छोड़ दी जाए। कई लोग पहले से सोच लेते हैं कि जो कार्य वे कर रहे हैं उसमें शायद सफलता न मिले। इस तरह के नकारात्मक विचारों से मन कमजोर बन जाता है, हिम्मत टूटने लगती है और शक्ति भी नहीं मिलती। भीतर की शक्ति भरने के लिए यह सकारात्मक सोच अनिवार्य है कि यह कार्य मैं अवश्य कर सकता हूँ। जैसे नेपोलियन के शब्दकोष में असम्भव जैसा कोई शब्द था ही नहीं क्योंकि इस दुनिया में सब कुछ सम्भव है। लेकिन व्यक्ति को सब कुछ सम्भव तब अनुभव होगा जब उसमें हिम्मत और ढाढ़स होगा। परिणाम अथवा फल की चिंता छोड़ कर जब कोई व्यक्ति हिम्मत रखकर जिम्मेवारी उठाता है तब ईश्वरीय मदद भी मिलती है। पराजय या असफलता व्यक्ति को अनुभवी बनाती है। अनुभव जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। अनुभवी के आगे दुनिया की कोई भी शक्ति हार सकती है। अनुभव होना ही आत्मोन्नति की निशानी है। उदाहरण के लिए किसी पर्वत की चोटी पर चढ़ने वाले को पहले से ही यह मालूम रहता है कि उसे ऊबड़-खाबड़ रास्ते मिलेंगे, आँधी-तूफान का भी सामना करना पड़ सकता है। रास्ते में जंगली जानवरों का सामना भी संभव है। चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति आ जाए या मार्ग कितना भी दुर्गम क्यों न हो लेकिन मन में हिम्मत व ढाढ़स रखने वाला व्यक्ति चलता ही जाता है और अपनी मंजिल पर पहुँच जाता है। इसलिए सदा यह सोचना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति भगवान द्वारा दी गई जिम्मेवारी उठाने की हिम्मत करेगा तो उसे भगवान की मदद भी मिलेगी। यह विचार मन में लाने से व्यक्ति निःसंकल्प स्थिति का अनुभव कर

सकता है। इस निर्संकल्प अवस्था में कर्म करने की खुशी स्वतः समाई रहती है। यह खुशी क्षणभंगुर सफलता से मिलने वाली महिमा से कहीं अधिक बढ़कर होती है।

### जिम्मेवारी का लक्ष्य

केवल श्रेष्ठ कर्म करना ही जिम्मेवारी नहीं है अपितु अन्य व्यक्तियों के साथ श्रेष्ठ व्यवहार करना तथा सम्बंधों को सुखदायक बनाकर रखना भी जिम्मेवारी के अन्तर्गत ही आता है। यदि कर्म श्रेष्ठ हो लेकिन आपस में सम्बंध मधुर न हो या अच्छा व्यवहार न किया जाए तो जिम्मेवारी निभाने में सफलता नहीं मिल सकती। कर्म तो स्थूल रूप है, जो कर्म आज आवश्यक है कल शायद उसकी आवश्यकता भी न पड़े। कर्म का प्रभाव भी सीमित रहता है जबकि सम्बन्ध और व्यवहार का प्रभाव दूरगामी रहता है। यही दूरगामी प्रभाव मन की स्थिति को स्वरूप प्रदान करता है। इसलिए मधुर सम्बन्ध और श्रेष्ठ व्यवहार के आधार पर मिलने वाली सफलता का प्रभाव सदाकाल तक रहता है और यही श्रेष्ठ जिम्मेवारी को सफलतापूर्वक निभाने की कला है।

### स्वयं के प्रति जिम्मेवारी

अब विचारणीय बात यह है कि किस-किस के प्रति हमारी क्या-क्या जिम्मेवारी है और हम किस हद तक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हैं? इस प्रश्न पर विचार करते हुए सर्वप्रथम अपनी आत्मा के प्रति जिम्मेवारी को समझने की आवश्यकता है। मैं एक आत्मा हूँ...मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ, शुद्ध स्वरूप हूँ—केवल यह चिंतन कर लेना ही पर्याप्त नहीं है, लेकिन इस चिंतन के साथ-साथ एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। वह है आत्मा के शुद्धिकरण की जिम्मेवारी। आत्मा जब इस संसार में आई थी तब शुद्ध स्वरूप थी। अब इस संसार से ब्रह्मलोक वापिस जाने के लिए वही शुद्ध स्वरूप होना चाहिए। उदाहरण के लिए व्यक्ति घर से बाहर खेलने, घूमने अथवा दफ्तर में जाता है, वहाँ दिन भर की मैल चढ़ जाती है, थकावट भी होती है तो जैसे ही वह अपने घर आएगा, अपनी थकावट मिटाएगा, स्नानादि करके शुद्ध हो जाएगा। आत्मा भी ब्रह्मलोक से इस धरती पर अपनी सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आई थी इसलिए अपनी आत्मा के शुद्धिकरण की बहुत बड़ी जिम्मेवारी हर व्यक्ति पर है। इस जिम्मेवारी को निभाने के लिए कर्मों को श्रेष्ठ बनाने की आवश्यकता है, जिसका आधार आत्मचिंतन व प्रभुचिंतन है।

## शरीर के प्रति जिम्मेवारी

आत्मा शरीर का आधार लेकर कर्म-इन्द्रियों द्वारा कर्म करती है। शरीर आत्मा के लिए अमूल्य वस्तु है। कहा भी जाता है कि मानव जीवन दुर्लभ है। जब यह दुर्लभ जन्म है, दुर्लभ शरीर है, दुर्लभ जीवन है तो निश्चय ही शरीर की सही सम्भाल करना आत्मा की दूसरी सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। इसके लिए संतुलित आहार, शुद्ध पानी, प्रदूषणरहित हवा और आवश्यकता अनुसार व्यायाम आवश्यक है। इससे तन और मन दोनों स्वस्थ रहेंगे।

## परिवार के प्रति जिम्मेवारी

आत्मा व शरीर के प्रति जिम्मेवारी के साथ-साथ व्यक्ति की अपने परिवार की, जिसमें वह अपनी रचना रचता है, पालन करना भी एक बड़ी जिम्मेवारी है। जैसे परमात्मा ने सृष्टि का सृजन करके एक जिम्मेवारी निभाई लेकिन उसने संसार की रचना करके इसे ऐसे ही नहीं छोड़ दिया। वह सर्व आत्माओं की पालना भी करते हैं। कहा जाता है कि चींटी को भी भगवान खिलाते हैं। जब चींटी भी भगवान की पालना से चल रही है तो इन्सान की क्या बात है। यदि कोई व्यक्ति अपनी की हुई रचना से भागता है तो वह कायर ही समझा जाएगा। अपने परिवार की पालना करने की जिम्मेवारी केवल रोटी, कपड़ा और मकान मुहैया करवाने से पूरी नहीं होती बल्कि उनके शरीर की पालना के साथ-साथ उनकी आत्माओं की पालना भी अत्यन्त आवश्यक है। आत्मा की पालना गुणों के द्वारा होती है। आत्मा को स्नेह, प्यार, खुशी और शक्ति देना उनके प्रति अपनी श्रेष्ठ जिम्मेवारी को निभाना है। अतः परिवार की पालना करना उनके प्रति अपनी जिम्मेवारी निभाना है।

## बेहद विश्व परिवार के प्रति जिम्मेवारी

जो जिम्मेवारी अपने परिवार के प्रति है वही जिम्मेवारी सारे विश्व के प्रति भी है क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सारा विश्व एक बेहद का परिवार है। आत्मा-आत्मा आपस में भाई-भाई ठहरे। यह संसार ईश्वर की रचना है। लेकिन यह नहीं समझना चाहिए कि संसार की जिम्मेवारी केवल भगवान की है। जैसे एक पिता पर जिम्मेवारी रहती है, वैसे ही बड़े बच्चे पर भी उतनी ही जिम्मेवारी होती है कि वे छोटे बच्चों की पालना में सहयोगी बनें। मानव भी ईश्वर की एक श्रेष्ठ रचना है इसलिए यह उत्तरदायित्व उस पर भी है कि वह ईश्वर की अन्य रचना की पालना करे। मनुष्य की यह जिम्मेवारी है कि वह ईश्वर का मददगार बने। इस जिम्मेवारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए मन में

सदा सब को सुख देने का लक्ष्य रखना आवश्यक है। सुख प्राप्त करने वाले व्यक्ति के दिल से निकलने वाली दुआएँ सुख देने वाले व्यक्ति के भाग्य को उज्ज्वल बना देगी। इसलिए उनके शरीर की पालना करने के साथ-साथ उनकी आत्मा की पालना करने की जिम्मेवारी निभाना भी आवश्यक है।

### ईश्वर के प्रति जिम्मेवारी

हमारी जितनी जिम्मेवारी अन्य आत्माओं के प्रति बनती है उतनी ही जिम्मेवारी ईश्वर के प्रति भी बनती है। जैसे एक पिता जब अपने बच्चों को रचकर उनकी पालना करता है तो उसके दिल के किसी कोने में यह इच्छा अवश्य छुपी रहती है कि बूढ़े हो जाने पर उसके बच्चे उसका ध्यान रखेंगे। बच्चों की भी यह जिम्मेवारी बन जाती है कि वे अपने बुजुर्ग माता-पिता की पालना करें। इसी प्रकार यद्यपि ईश्वर हम सबका रचयिता है, प्रतिपालक है, सुखदाता है तथापि हमारी यह जिम्मेवारी ईश्वर के प्रति बनती है के हम परमात्मा का नाम रोशन करें। कैसे करें? जिस लक्ष्य से हम इस संसार में आए थे उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम वैसे ही लक्षण धारण करें। वह लक्षण हैं—स्वयं के असली स्वरूप को पहचानना, परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को पहचानना और उस पहचान के आधार पर श्रेष्ठ कर्म करके परमात्मा का नाम रोशन करना। यही सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। बीज को पानी देना सारे विश्व को पानी देने के समान है। इसलिए मन में कभी भी जिम्मेवारी निभाने से घबराना नहीं है। जिम्मेवारी निभाने से मन में स्वतः ही शक्ति, हिम्मत व उमंग का संचार होगा और ईश्वर की मदद तो निश्चय ही प्राप्त होगी। यही आधार है स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व-परिवर्तन करने का।

**ब्रह्माकुमारी शीलू, माउण्ट आबू**